

लाइव न्यूज LIVE

बुधवार , 28 फरवरी 2018

वैज्ञानिक तथ्य

केमिकल का असर खत्म करता है उबटन

होली में रंग खेलते से पहले व बाद में उबटन जरूर लगाएं। इससे रंग के विषाक्त केमिकल का असर समाप्त होने के साथ ही रंग भी आसानी से छूट जाता है। उबटन के प्रयोग से कीड़े-मकोड़े व बैक्टीरिया का असर भी समाप्त हो जाता है। इसीलिए होली पर उबटन लगाने की परम्परा चली

आ रही है। यह जानकारी वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी व वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. भरत राज सिंह ने दी। उन्होंने कहा कि होली का त्यौहार ऐसे समय पड़ता है जब मौसम में बदलाव शुरू होता है। ठंडे मौसम से गर्म मौसम में प्रवेश के कारण खून की नसें ढीली पड़ जाती हैं। इससे खून का प्रवाह

धीमा पड़ जाता है। जिससे शरीर में थकान और सुस्ती महसूस होती है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसे दूर भगाने के लिए ही लोग जोर-जोर से फाग के गाने गाते हैं। इससे ढीली नसें सक्रिय होने लगती हैं और सुस्ती दूर हो जाती है। संगीत सुनने से भी शरीर को ऊर्जा मिलती है।



हर्बल गुलाल से शरीर पर अच्छा प्रभाव

प्रो. सिंह ने कहा कि पलाश आदि से तैयार किये गये हर्बल रंग व अबीर का शरीर पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। ढाक के फूलों से तैयार किया गया रंग व हर्बल अबीर-गुलाल से शरीर को सकून मिलता है।

नष्ट होते हैं बैक्टीरिया: शरद ऋतु की समाप्ति और वसंत ऋतु के आगमन के कारण पर्यावरण व शरीर में बैक्टीरिया की वृद्धि हो जाती है। होलिका जलाने पर उसके आसपास करीब 65-75 डिग्री सेंटीग्रेट तक तापमान बढ़ जाता है। जब लोग जलती होलिका की परिक्रमा करते हैं तो होलिका से निकलता ताप शरीर व आसपास के पर्यावरण में मौजूद बैक्टीरिया को नष्ट कर देता है।



प्रो. भरत राज सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक